दुनिया विनाश की ओर

दो सौ से अधिक वैज्ञानिकों द्वारा संयुक्त रूप से तैयार की गई इस रिपोर्ट में साफ तौर पर कहा गया है कि बात सुदूर अतीत की या सदी के आखिर की नहीं है कि मौजूदा पीढ़ी यह सोचकर निश्चिंत रहे कि जो भी होगा, हमारी आंखों के सामने तो नहीं होगा।

नीति मोहन।।

संयुक्त राष्ट्र के इंटर गवर्नमेंटल पैनल ऑन क्लाइमेट चेंज (आईपीसीसी) की ताजा रिपोर्ट ने एक बार फिर यह अहसास कराया है कि दुनिया विनाश की ओर तेजी से बढ़ती जा रही है। दो सौ से अधिक वैज्ञानिकों द्वारा संयुक्त रूप से तैयार की गई इस रिपोर्ट में साफ तौर पर कहा गया है कि बात सुदूर अतीत की या सदी के आखिर की नहीं है कि मौजूदा पीढ़ी यह सोचकर निश्चिंत रहे कि जो भी होगा, हमारी आंखों के सामने तो नहीं होगा। रिपोर्ट के मुताबिक, मौजूदा हालात बने रहे तो दो दशक के अंदर यानी 2040 तक ही पृथ्वी का तापमान 1.5 डिग्री सेल्सियस बढ़ चुका होगा। उसके नतीजों के रूप में हमें जो कुछ भुगतना पड़ेगा, उसका अंदाजा लगाने के लिए रिपोर्ट के विस्तार में जाने या ऐसे ही अन्य अध्ययनों को खंगालने की जरूरत नहीं है। प्रकृति अभी से अलग–अलग घटनाओं–आपदाओं के रूप में हमें प्रत्यक्ष रूप से इसका संकेत देने लगी है। अपने देश में पहाड़ों के टूटने, ग्लैशियर खिसकने और एक ही समय में कहीं सूखा तो कहीं बाढ़ की स्थितियां बनने की खबरें अब पहले की तरह नहीं चौंकातीं। अन्य देशों में भी मौसम की ऐसी विचित्रताएं सामान्य लगने लगी हैं। अमेरिका और कनाडा के जंगलों की आग दुनिया भर में खबर बनी। दुनिया के सबसे ठंडे इलाकों में गिने जाने वाले साइबेरिया में अत्यधिक गर्मी (सीवियर हीट) पड़ी है और जंगल में आग लगने की घटनाएं भी हुई हैं।

आईपीसीसी की रिपोर्ट यह बात भी साफ कर देती है कि इन सबके लिए कुदरत नहीं बल्कि इंसानी गतिविधियां ही मुख्य रूप से जिम्मेदार हैं। रिपोर्ट में पाया गया है कि ग्लोबल वॉर्मिंग में ज्वालामुखी विस्फोट या सूरज की गर्मी जैसे प्राकृतिक कारकों की भूमिका लगभग शून्य रही है। बहरहाल, इस रिपोर्ट की खास बात यह भी है कि यह पर्यावरण विशेषज्ञों की तैयार की हुई कोई सामान्य रिपोर्ट नहीं बल्कि संयुक्त राष्ट्र के जरिए दुनिया के 195 देशों के प्रतिनिधियों द्वारा समर्थित दस्तावेज है। यानी इसके पीछे एक तरह की वैश्विक सहमति है। और यह ऐसे समय सामने आई है जब ग्लासगो में होने वाले यूएन क्लाइमेट चेंज कॉन्फ्रेंस (कॉप 26) को तीन महीने से भी कम समय रह गया है। वह मौका होगा इस वैश्विक सहमति को ठोस निष्कर्षों तक ले जाकर नीतियों और फैसलों का रूप देने का। वह पिछली सहमतियों पर अमल का लेखा–जोखा लेने का भी मौका होगा। यह देखना होगा कि इस दिशा में ठोस कदम उठाए जाने में कौन सी बाधाएं हैं और उन्हें दूर करना होगा। हमें हर हाल में धरती को बचाना होगा। इसके साथ, जलवायु परिवर्तन के बारे में सबसे बड़ा सच यह भी है कि ग्रीन हाउस गैसों के इमिशन में चीन और अमेरिका का आधा योगदान है। इसलिए उन्हें खासतौर पर इसमें कमी लाने की पहल करनी होगी। इसके साथ पूरे वैश्विक समुदाय को इस अभियान में शामिल होना होगा क्योंकि जलवायु परिवर्तन का असर पूरी धरती पर पड़ रहा है।

जिज्ञासु

धर्म-दर्शन

अशोक वोहरा।

भक्ति का तात्पर्य है जो सीधे भगवद् प्राप्ति करा दे, यह तभी संभव है जब साधक या भक्त अपने उपास्य का स्वरूप, स्वभाव और प्रभाव को जान लेता है।

भक्ति भगवत्व को प्राप्त होने से पूर्व प्रारंभ होती है और भगवत्व प्राप्ति के बाद भी सतत्व चलती रहती है। भक्ति वह स्थिति है जो साधक को एकरस कर भव बंधन से मुक्त कर देती है।

उक्त उद्‌घ्गार वृंदावन के संत स्वामी गिरीशानन्द सरस्वती महाराज ने अपने प्रवचन में व्यक्त किए।

स्वामी जी जिज्ञासुओं को भक्ति, ज्ञान और साधन का सूक्ष्म ज्ञान देते हुए कहते हैं, भक्ति और ज्ञान साधन नहीं है, अपितु एक–दूसरे के पूरक हैं। इसमें एक को भी पकड़ लेने से भगवान की प्राप्ति हो जाती है। सूत्र है कि ज्ञान से भक्ति की प्राप्ति होती है और भक्ति से साधक परम ज्ञानी हो जाता है।

संपादकीय

क्या बन पाएगी एकता

क्या विपक्षी एकता की कोशिश अब पूरी तरह से बेपटरी हो जाएगी? नेताओं का मानना है कि अभी यह कहना जल्दबाजी होगा। विपक्षी दलों के नेताओं के अनुसार अभी इस मसले पर तनातनी जरूर दिख सकती है, लेकिन इसका असर विपक्षी एकता पर नहीं दिखेगा। उन्होंने कहा कि हर पार्टी अपने संगठन को मजबूत करना चाहती है, उसका विस्तार करना चाहती है। इसमें कोई बुराई नहीं है, लेकिन 2024 में बीजेपी के सामने इनके लिए एक होने का विकल्प नहीं होगा, बल्कि यह सबकी मजबूरी होगी। ऐसे में वे कुछ महीनों तक खुद को विस्तार देकर एक बार फिर विपक्षी एकता की कोशिश में लग सकते हैं। वे यह भी समझते हैं कि क्षेत्रीय दल कितने भी एकजुट हो जाएं, अगर कांग्रेस ने अपनी स्थिति नहीं सुधारी तो इस लड़ाई का कोई मतलब नहीं। इसके पीछे तर्क यह है कि 2019 आम चुनाव में लगभग 225 लोकसभा सीटों पर कांग्रेस–बीजेपी का सीधा मुकाबला हुआ, जिनमें 200 से अधिक सीटें बीजेपी ने जीतीं। ऐसी परिस्थिति बनी रही तो उनके एक होने का भी अधिक लाभ नहीं होगा और वे बीजेपी को नहीं रोक सकते हैं। ऐसे में उनका फोकस गढ़ बचाने पर ही अधिक रह सकता है और उनके विस्तार प्लान को ब्रेक लग सकता है। वहीं अगले साल फरवरी–मार्च में पांच राज्यों के चुनाव परिणाम भी कोई न कोई दिशा तो लेंगे ही। जाहिर है कि वे मौजूदा तनातनी के बाद भी विपक्षी एकता की कोशिश को खारिज नहीं करते हैं।

ऐसा संदेश गया कि विपक्षी दल पिछली गलतियों से सीख लेते हुए इस बार एक मंच पर आएंगे और आपसी मतभेद दूर करेंगे। लेकिन अभी विपक्षी एकता कोई आकार लेती कि पिछली बार की तरह ही फिर यह पटरी से उतरती दिखने लगी।

क्यों आई यह नौबत

नरेंद्र नाथ।।

पिछले कुछ महीनों से 2024 आम चुनावों में बीजेपी से मुकाबले के लिए विपक्षी दलों की एकता की कोशिश चल रही थी। इसके लिए एक के बाद एक कई मीटिंग भी हुईं। ऐसा संदेश गया कि विपक्षी दल पिछली गलतियों से सीख लेते हुए इस बार एक मंच पर आएंगे और आपसी मतभेद दूर करेंगे। लेकिन अभी विपक्षी एकता कोई आकार लेती कि पिछली बार की तरह ही फिर यह पटरी से उतरती दिखने लगी। हालांकि इस बार इसके पीछे कारण थोड़े अलग हैं। अभी तक विपक्षी एकता में नेतृत्व को लेकर सबसे अधिक विवाद होता था। लेकिन इस बार विपक्षी दलों की आपस में ही सेंधमारी होने लगी। जिस तरह समान विचारधारा वाले विपक्षी दल दूसरे दलों के नेताओं को अपने पाले में करने लगे हैं, उससे विपक्षी एकता की कोशिश फिलहाल विपक्ष बनाम विपक्ष की सियासी जंग में बदल गई है। टीएमसी कांग्रेस नेताओं को अपने पाले में कर रही है। कांग्रेस लेफ्ट नेताओं को शामिल कर रही है। आपस में पाले बदलने का ट्रेंड अभी रुकता भी नहीं दिख रहा है। इससे दलों के बीच कटुता भी सामने आई है। जहां महज कुछ दिनों पहले विपक्षी एकता के लंबे–चौड़े दावे हो रहे थे, अब बयानों में तल्खी है। अब तो सवाल यह पूछा जा रहा है कि विपक्ष बनाम

विपक्ष की जंग कहां तक जाएगी?

एकता की बातों के बीच ऐसी नौबत क्यों आई? क्षेत्रीय दल विपक्षी एकता में जारी इस जंग के लिए कांग्रेस को ही जिम्मेदार ठहरा रहे हैं। उनका मानना है कि पिछले कुछ सालों से कांग्रेस के गिरते ग्राफ से हालात बदल गए हैं, जिसे कांग्रेस समझ नहीं पा रही है। क्षेत्रीय दल कांग्रेस की निष्क्रियता को जिम्मेदार ठहराते हैं। उनका मानना है कि कई राज्यों में कांग्रेस बीजेपी को टक्कर नहीं दे रही है, ऐसे में विपक्ष का स्पेस किसी न किसी को तो लेना ही होगा। पूर्वोत्तर भारत के एक क्षेत्रीय दल के सीनियर नेता ने एनबीटी को बताया कि दो सालों में अब तक पार्टी एक पूर्णकालिक अध्यक्ष ही नहीं चुन पाई है। उन्होंने कहा कि आपसी गुटबाजी अलग बात है, पार्टी धरातल पर गंभीर नहीं दिखती है। नेताओं ने कहा कि बाहर ही नहीं, बल्कि कांग्रेस के अंदर भी इस बात को लेकर बेचैनी है। ऐसे में अब क्षेत्रीय दलों का मानना है कि 2021 में कांग्रेस की स्थिति 2004 वाली नहीं रही और विपक्ष की ताकत का नए सिरे से गठन होना चाहिए, उन्हें स्पेस मिलना चाहिए। वहीं आम आदमी पार्टी, टीएमसी जैसे दलों को यह भी लगने लगा है कि यही मौका है जब वे अपनी पार्टी का विस्तार कर सकते हैं।

उधर कांग्रेस को लगता है कि क्षेत्रीय दल अति महत्वाकांक्षा का शिकार हो रहे हैं, और वे जो कर रहे हैं उससे आखिरकार बीजेपी को ही फायदा होगा। कांग्रेस नेताओं का तर्क है कि विपक्षी एकता का मतलब यह नहीं है कि वे अपनी जमीन बाकी दलों को दे दें। लेकिन कांग्रेस भी इस खेल में शामिल है। लेफ्ट नेता कन्हैया को तब दल में शामिल किया गया, जब सीपीआई नेता डी. राजा पार्टी से यह फैसला नहीं लेने का आग्रह कर रहे थे। वहीं कन्हैया के शामिल होने से न सिर्फ लेफ्ट दलों से, बल्कि बिहार में आरजेडी से भी कांग्रेस के रिश्ते प्रभावित हो सकते हैं। सूत्रों के अनुसार पप्पू यादव को भी कांग्रेस शामिल कर सकती है, जिनका आरजेडी से विरोध है। अभी जो संकेत मिल रहे हैं उनके हिसाब से अगले कुछ दिनों में तनातनी और भी बढ़ सकती है। इसका असर विपक्षी दलों की एकता पर पड़ सकता है।

जाहिर है, आने वाले समय में विपक्षी एकता की रेल तो हमेशा की तरह चलती रहेगी, लेकिन फिलहाल यह बेपटरी जरूर होती दिख रही है।

अष्टयोग-5059

1	5		3		7	
	30	7	31	4	34	2
6		2		5		
	29		33		37	3
4		1	6			7
	30		32		34	
	5			1	2	4

प्रस्तुत खेल सुडोकू व जोड़ की पद्धति का मिश्रण है. खड़ी व आड़ी पंक्तियों में 1से 7 तक के अंक लिखने अनिवार्य हैं. गहरे काले वर्ग में लिखी संख्या चारों और के 8 वर्गों की संख्या का कुल योग होगी. सीधी अथवा आड़ी पंक्तियों में 1 से 7 तक के अंक होना अनिवार्य है.

अष्टयोग 5058 का हल

6	5	4	3	2	7	1
2	34	7	30	4	28	2
7	2	1	6	3	5	4
3	25	6	33	6	41	5
1	3	2	4	5	7	6
5	28	5	33	7	38	3
4	5	3	6	1	2	7

Jagrutidaur.com, Bangalore

अपना ब्लॉग

इतिहास, संस्कृति और सभ्यता का एक अनमोल पड़ाव

मोहन। यहां एक तुलना उपयोगी हो सकती है। सुकरात की जिंदगी के अंतिम वर्ष बंदीगृह में बीते। वह जिस जेल में रहे, उसकी दीवारें 2420 वर्ष बाद भी सत्य और तार्किक निष्ठा की उनकी प्रतिबद्धता का आगंतुकों के समक्ष बखान करती हैं। 2500 साल प्राचीन यह इलाका एक्रोपोलिस कहलाता है, जिसका संरक्षण सरकार करती है। आप वहां आज भी सुन सकते हैं सुकरात की प्रश्न और प्रति–प्रश्नों पर ओजस्वी वाणी। जिनको ऐतिहासिक धरोहरों की कही गाथाएं सुनाने की बात कल्पित लगती है, वे बामियान में बुद्ध की प्रतिमाओं के ध्वंस को याद करें, इन प्रतिमाओं से आते दया–करुणा और क्षमा के स्वर जब तालिबान के कानों को सुन्न करने लगे, जब बुद्ध की वाणी ने उनकी हिंसा, रक्तपिपासा और कुत्सित चिंतन को निरुत्तर कर दिया तो घबराए और बेचैन तालिबान ने उन प्रतिमाओं को विखंडित करने में ही भलाई समझी। जर्मनी के यंत्रणा घर भी अपने समय के अत्याचार और मानवीय त्रासदी की घटनाएं हर आगंतुक को सुनाते हैं। वे बताते हैं कि आज से 9 दशक पहले इंसान को कैसे एक निरंकुश शासक के क्रूर और अमानवीय अत्याचारों का सामना करना पड़ा।